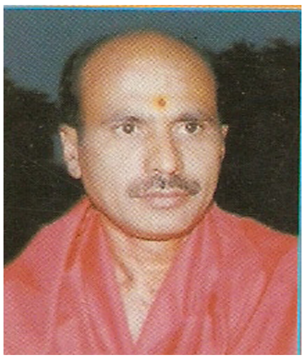
Ma Kamakala Kali Gadya Sahasranamam
मां कामकलाकालि का गद्य-सहस्रनाम



Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

प्रिय पाठकगण ! आपके लिए श्रीमद् आदिनाथ द्वारा रचित बहुत ही दुर्लभ मां कामकलाकालि के सहस्रनाम का मन्त्ररूप गद्य को स्पष्ट कर रहा हूँ। इसका प्रभाव यह है कि इस भौतिक संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो पूर्ण न हो सकता हो। इसके अर्थ को समझते हुए बहुत ही विनीत भाव से मां का ध्यान कर इसका पाठ करें, तो मनोवांछित प्रत्येक फल सम्भव है। इसके साथ ही साथ मैं इसका अर्थ भी स्पष्ट कर रहा हूँ, ताकि आपको अपूर्णता का अहसास न हो। इसके अतिरिक्त संस्कृत के कठिन शब्दों को मैंने हाईफन के द्वारा अधिक सरल बनाने का प्रयास किया है, जिससे सम्भवतः आप अवश्य ही पाठ के पठन में सरलता महसूस करेगें। पाठ निम्नांकित स्वरूप में आरम्भ होता है-

महाकाल ने कहा- हे महेशानि! अब मैं संजीवन के रूप में स्थित एवं महापापनाशक गद्य-सहस्रनाम को बताउंगा जिसे पढ़ने वाला व्यक्ति हे प्रिये! प्राक्तन समस्त जन्मों को सफल बना लेता है तथा नहीं पढ़ने वाले का समस्त जन्मकर्म पिफल रहता है, उस पाठ को मैं तुमसे कह रहा हूँ-

पाठ

ॐ फ्रें जय जय कामकलाकालि कपालिनि सिद्धि-करालि सिद्धि-विकरालि महा-बलिनि त्रिशूलिनि नर-मुण्ड-मालिनि शव-वाहिनि कात्यायिनि महाट्टहासिनि सृष्टि-स्थिति-प्रलय कारिणि दिति-दनुज-मारिणि श्मशान-चारिणि। महाघोररावे अध्यासित-दावे अपरिमित-बल-प्रभावे। भैरवी-योगिनि-डाकिनी सह-वासिनि जगद्भासिनि स्व-पद-प्रकाशिनि। पापौघ-हारिणि आपद्-उद्धारिणि अप-मृत्यु-वारिणि। बृहन्मद्य-मानोदरि सकल-सिद्धि-करि चतुर्दश-भुवनेश्वरि। गुणातीत-परम-सदाशिव मोहिनि अपवर्ग-रस-दोहिनि रक्तार्णव-लोहिनि। अष्ट-नागराज भूषित-भुजदण्डे आकृष्ट-कोदण्डे परम-प्रचण्डे। मनो-वाग-गोचरे मख-कोटि-मंत्रमय-कलेवरे महा-भीषण-तरे प्रचल-जटाभार-भास्वरे सजल-जलद-मेदुरे जन्म-मृत्यु-पाशभिदुरे सकल-दैवत-मय-सिंहासन-अधिरूढ़े गुह्याति-गुह्य-परापर-शक्ति-तत्तरूढ़े वांगमयी-कृत-मूढ़े । प्रकृत्य पर-शिव-निर्वाण-साक्षिणि त्रिलोकी-रक्षिणि दैत्य-दानव-भक्षिणि। विकट-दीर्घ-दंष्ट्र-संचूर्णित-कोटि-ब्रह्म-कपाले चन्द्र-खण्डांकित भाले देह-प्रभाजित-मेघजाले । नवपंच-चक्र-नयिनि महाभीमषोडश-शयिनि महा-भीम-षोडश-शयिनि सकल-कुलाकुल चक्र-प्रवर्तिनि निखिल-रिपुदल-कर्त्तिनि महामारी-भय-निवर्त्तिनि लेलिहान-रसना करालिनि त्रिलोकी-पालिनि त्रय-स्त्रिंशत्कोटि शस्त्रास्त्र-शालिनि । प्रज्वल-प्रज्वलन-लोचने भव-भय-मोचने निखिलागमा-देशित रोचने। प्रपंचातीत-निष्कल-तुरीयाकारे

अखण्ड-आनन्दाधारे निगमागम-सारे। महा-खेचरी-सिद्धि विधायिनि निजपद-प्रदायिनि घोर-अट्टहास-सन्त्रासित त्रिभुवने चरण-कमल-द्वय-विन्यास-खर्वी-कृतावने विहित-भक्तावने।

अर्थः- ओं फ्रें जय जय कामकलाकालि, अपने हाथ में कपाल धारण करने वाली, सिद्धिकराली, सिद्धि-विकराली, महाबलशाली, त्रिशूलिनी, नरमुण्डों की माला धारण करने वाली, शव पर आरूढ़, कत गोत्र में प्रकटी, महा अट्टहास करने वाली, सृष्टि-स्थिति-प्रलय करने वाली, दैत्यों और दानवों का विध्वंस करने वाली, श्मशान में विचरण करने वाली, अपने तेजोमय रूप से महाघोर शब्द उत्पन्न करने वाली, दावाग्नि का अहसास कराने वाली, अपरिमित बल और अपरिमित प्रभाव वाली, भैरवी, योगिनी, और डाकिनी के साथ रहने वाली, विश्व को प्रसन्न रखने वाली, अपने पद को प्रकाशित करने वाली, पाप-समूह को नष्ट करने वाली, आपत्ति से उद्धार करने वाली, अपमृत्यु को दूर करने वाली, विस्तारित एवं मद से पूर्ण उदर वाली, समस्त सिद्धि प्रदान करने वाली, चौदह भुवनों की स्वामिनी, गुणातीत भगवान परम शिव को आकर्षित करने वाली, मुक्तिरस का दोहन करने वाली, खून के रंग के समान लाल वर्ण वाली, अपनी भुजाओं में आठ नागराज धारण करने वाली, धनुष खींचकर तैयार रखने वाली, परम, प्रचण्ड, मन और वाणी की अगोचर, करोडो यज्ञ एवं मंत्रमय देह वाली, महाभीषण, चलती हुई जटा के भार से काले बादलों के समान प्रतीत होती काली,

जीवन-मृत्यु के पाश से विमुक्त करने वाली, सभी देवों से युक्त सिंहासन पर विराजित, गुह्य-अतिगुह्य, पर-अपर शक्ति तत्व वाली, मूर्ख को वक्ता बना देने वाली, प्रकृति एवं अपर शिव के निर्वाण की साक्षी, त्रैलोक्य की रक्षक, दैत्य और दानवों का भक्षण करने वाली, विकट एवं लम्बे दांतों से करोड़ों ब्रह्मा के कपालों को चूर्ण कर देने वाली, भाल पर चन्द्रखण्ड से सुशोभित, शरीर की कान्ति से बादलों की चमक को पराजित कर देने वाली, चौदह चक्र, नव चक्र और पांच चक्रों की अधिष्ठात्री, षोडश मातृकाओं की आधारभूता, समस्त कुल-अकुल चक्र का प्रारम्भ करने वाली, समस्त शत्रुओं की नाशक, महामारी के डर को हटाने वाली, लपलपाती हुई जीभ के कारण भयंकर त्रिजगत् की पालनहारा, तैंतीस करोड़ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, जलती अग्नि जैसे नेत्रों वाली, भवभय से मुक्त करने वाली, समस्त आगमों में रूचि रखने वाली, प्रपंच से परे निष्कल तुरीय आकार वाली, अखण्ड आनंद की आधार, निगम और आगम की सार, महाखेचरी की सिद्धि प्रदान करने वाली, अपना पद प्रदान करने वाली, महामायाविनी, घोर अट्टाहस से त्रिभुवन को भयभीत कर देने वाली, दोनों चरणों के न्यास से पृथ्वी को छोटी कर देने वाली, अपने भक्तों की रक्षा करने वाली (आपको नमस्कार है।)

ॐ क्लीं क्रों स्फ्रों हूं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें भगवति प्रसीद प्रसीद जय जय जीव जीव ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हस हस नृत्य नृत्य क छ भगमालिनि भगप्रिये भगातुरे भगांकिते भगरूपिणि भगप्रदे भग-लिंग-द्राविणि। संहार-भैरव-सुरत-रस लोलुपे व्योम-केशि पिंगकेशि महा-शंख- समाकुले खर्पर-विहस्त-हस्ते रक्तार्णव-द्वीप-प्रिये मदनोन्मादिनि। शुष्क-नर-कपाल-माला-भरणे विद्युत-कोटि-समप्रभे नरमांस-खण्ड-कवलिनि। वमदग्नि-मुखि फेरू-कोटि-परिवृते कर-तालिका-त्रासित-त्रिविष्टपे। नृत्य-प्रसारित-पादाघात परिवर्तित -भूवलये। पद-भाराव-नम्रीकृत-कमठ-शेषा-भोगे। कुरूकुल्ले कुंच-तुण्डि रक्तमुखि यमघंटे चर्च्चिके दैत्यासुर दैत्य राक्षस-दानव-कुष्माण्ड-प्रेत-भूत-डाकिनी-विनायक-स्कन्द घोणक क्षेत्रपाल-पिशाच -ब्रह्मराक्षस-वेताल-गुह्यक-सर्प-नाग-ग्रह नक्षत्र-उत्पात-चौराग्नि-स्वापद-युद्ध-वज्रोपलाश-निवर्ष-विद्युन्मेघ विषोप-विषकपट कृत्या-अभिचार-द्वेष-वशीकरण-उच्चाटन-उन्माद अपस्मार भूतप्रेत-पिशाचावेशन-नदी-समुद्र-आवर्त कान्तारघोर अन्धकार-महामारी-बालग्रह-हिंस्र सर्वस्वापहारि-माया-विद्युत् दस्यु-वंचक-दिवाचर-रात्रिंचर-संध्याचर-श्रृंगि-नखि-दंष्ट्रि-विद्युत-उल्का-अरण्यदर-प्रान्तरादि-नानाविध-महोपद्रव-भंजनि सर्वमंत्र तंत्र यंत्र-कुप्रयोग-प्रमर्द्दिनि षडाम्नाय-समय-विद्या-प्रकाशिनि श्मशाना-ध्यासिनि । निजबल-प्रभाव-पराक्रम-गुण-वशीकृत कोटि ब्रह्माण्ड-वर्ति-भूतसंघे । विराड्रूपिणि सर्वदेव-महेश्वरि

सर्वजन-मनोरंजनि सर्वपाप-प्रणाशिनि अध्यात्मिकाधि-दैविक आधिभौतिक-आदि-विविध हृदयाधि-निर्द्दलिनि कैवल्य-निर्वाण बलिनि दक्षिणकालि भद्रकालि चण्डकालि कामकलाकालि कौलाचार-व्रतिनि कौलाचार-कूजिनि कुलधर्म-साधनि जगत्कारण कारिणि महारौद्रि रौद्रावतारे अबीजे नानाबीजे जगद्बीजे कालेश्वरि कालातीते त्रिकाल-स्थायिनि महाभैरवे भैरवगृहिणि जननि जन-जनन-निवर्त्तिनि प्रलय-अनल-ज्वाला-जालजिह्वे विखर्वोरू फेरूपोत-लालिनि मृत्युंजय-हृदयानन्दकरि विलोल-व्याल कुण्डल-उलूक-पक्षच्छत्र-महाडामरि नियुत-वक्त्र-बाहुचरणे सर्वभूत दमनि नीलांजन-समप्रभे योगीन्द्र-हृदय-अम्बुज-आसन सिथत नीलकण्ठ-देहार्द्धहारिणि षोडश-कलान्त-वासिनि हकारार्द्ध चारिणि काल-संकर्षिणि कपालहस्ते मद-घूर्णित-लोचने निर्वाण दीक्षा-प्रसादप्रदे निन्दानन्द-अधिकारिणि मातृगण-मध्यचारिणि त्रयस्त्रिं-शत्-कोटि-त्रिदश-तेजोमय-विग्रहे प्रलयाग्निरोचिनि विश्व कर्त्रि विश्वाराध्ये विश्व जननि विश्व-संहारिणि विश्व-व्यापिके विश्वेश्वरि निरूपमे निर्विकारे निरंजने निरीहे निस्तरंगे निराकारे परमेश्वरि परमानन्दे परापरे प्रकृति-पुरूषात्मिके प्रत्ययगोचरे प्रमाणभूते प्रणवस्वरूपे संसारसारे सच्चिदानन्दे सनातनि सकले सकल-कलातीते सामरस्य-समयिनि केवले कैवल्यरूपे कल्पनातिगे काललोपिनि कामरहिते कामकलाकालि भगवति।

अर्थः- ओं क्लीं क्रों स्फ्रों हूं ह्रीं छ्रीं स्त्रीं फ्रें भगवति प्रसीद प्रसीद जय जय जीव जीव ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हस हस नृत्य नृत्य क छ भगमालिनी भगप्रिये भगातुरे भगांकिते

भगरूपिणी भगप्रदे भग और लिंग को द्रवित करने वाली, संहार भैरव के साथ सुरत करने से उत्पन्न आनन्द की लोलुप, शिव की भार्या, पिंगकेश वाली, नरकपाल से आवृता, हाथ में खप्पर लिये हुए, रक्त समुद्र और रक्त द्वीप के प्रति आसक्त, कामदेव को उन्मत्त करने वाली, सूखे हुए नरकपालों के आभूषण धारण करने वाली, करोड़ों बिजली के समान चमक वाली, मनुष्य के मांस को ग्रहण करने वाली, मुख से अग्नि का वमन करने वाली, करोड़ों गिदड़ियों से घिरी हुई, हाथ की ताली मात्र से स्वर्ग को कंपा देने वाली, नृत्य के लिए फैलाये गये पैर के आघात से पृथ्वी को मोड़ देने वाली, पैर के भार से कच्छप और शेषनाग के फन को झुका देने वाली, कुरूकुल्ले जैसे संकुचित मुख वाली, रक्त से भरे हुए मुख वाली, यमघंटा चर्च्चिका दैत्य असुर दैत्यराक्षस दानव कुष्माण्ड प्रेत भूत डाकिनी विनायक स्कन्द घोणक क्षेत्रपाल पिशाच ब्रह्मराक्षस बेताल, गुह्यक सर्प नाग ग्रह-नक्षत्र के उत्पात चोर अग्नि जन्तु से युद्ध वज्र उपल अशनि की वर्षा विद्युत मेघ विष उपविष कपटपन अभिचार द्वेष वशीकरण उच्चाटन उन्माद मिर्गी भूत प्रेत पिशाच का आवेश नद-नदी समुद्र के चारों ओर के घने जंगल अंधकार महामारी बालग्रह हिंसक सर्वस्व का अपहरण करने वाले मायावी डाकू ठग लुटेरे चोर संध्याचर सींग नख दांत वाले जीव, विद्युत उल्का अरण्य उसके समीप का स्थान आदि अनेक प्रकार के उपद्रव का नाश करने वाली, समस्त मंत्र-तंत्र-यंत्र के दुष्प्रयोग को नष्ट

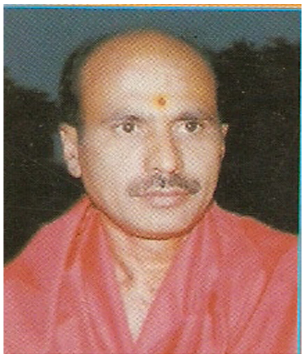
करने वाली समस्त आम्नाय के सिद्धान्त और ज्ञान का प्रकाश करने वाली, श्मशान-निवासिनी, अपने बल, प्रभाव, पराक्रम और गुणों के कारण असंख्य ब्रह्माण्डों में रहने वाले प्राणियों को वश में करने वाली, विराट-स्वरूपा, समस्त देवों की अधीश्वरी, समस्त जनों का मनोरंजन करने वाली, सभी के पापों को नष्ट करने वाली, आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक आदि द्वारा विविध हृदय की पीड़ा का नाश करने वाली, कैवल्य निर्वाण प्रदान करने वाली दक्षिण काली, भद्र काली, चण्डकाली, कामकलाकाली, कौलाचार व्रत करने वाली, कौलाचार का प्रचार करने वाली, कुलधर्म की साधना करने वाली, जगत् के कारण की कारण, महारौद्री, स्वयम्भू, नानाबीज, जगत की कारणभूता, काल की स्वामिनी, काल से परे, त्रिकाल-स्थापिनी, महाभयंकर, भैरव की भार्या, जननी, मनुष्य के जन्मबंधन को हरने वाली, प्रलय-अग्नि की ज्वाला के समूह के समान जिह्वा वाली, छोटी जंघाओं वाली, सियार के बच्चे का पालन करने वाली, महादेव मृत्युंजय के हृदय को प्रसन्न करने वाली, चंचल सर्प का कुण्डल और उल्लू के पंखों का छत्र धारण करने से महाभयंकर, दश हजार करोड़ मुख, बाहु और चरणों वाली, समस्त भूतों का दमन करने वाली, नीली स्याही के समान प्रभा वाली, योगियों के हृदय-कमल-रूपी आसन पर स्थित नीलकण्ठ भगवान की अर्धदेह को धारण करने वाली, सोलह कलाओं के अन्त अर्थात् अमृताकला में निवास करने वाली, 'ह' कार के अर्ध

यानि विसर्ग में संचरण करने वाली, काल-संकर्षिणी, हाथ में कपाल धारण करने वाली, मद से मस्त नेत्रों वाली, निर्वाण दीक्षा रूपी प्रसाद प्रदान करने वाली, निंदा और आनन्द- दोनों की अधिकारिणी, मातृसमूह के मध्य में विचरण करने वाली, तैंतीस करोड़ देवताओं के तेज की देह वाली, प्रलयकाल में उत्पन्न अग्नि के समान कान्ति वाली, सृष्टि का संहार करने वाली, विश्व द्वारा पूजिता, सृष्टि की रचना करने वाली, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त, विश्व की ईश्वरी, उपमारहित विकारशून्य कलंकवर्जित इच्छारहित निस्तरंग निराकार परमेश्वरी परम आनन्दस्वरूपा परापरा प्रकृति-पुरूष स्वरूपा ध्यान से जान जाने वाली, प्रमाण स्वरूपा, ओंकार स्वरूपा, संसार की तत्वभूत सत्-चित्-आनन्दस्वरूपा, सनातनी, कलायुक्ता, सम्पूर्ण कलाओं से परे, सामरस्य सिद्धान्त वाली, केवल, केवल्यरूपा, कल्पनातीत काल का लोप करने वाली, कामरहित मां कामकलाकाली भगवती (आपको नमस्कार है।)

ॐ ख्फ्रें ह्सौः सौः श्रीं ऐं ह्रौं क्रों स्फ्रों सर्वसिद्धिं देहि-देहि मनोरथान् पूरय-पूरय मुक्तिं नियोजय-नियोजय भवपाशं समुन्मूलय-समुन्मूलय जन्ममृत्यु तारय-तारय परविद्यां प्रकाशय-प्रकाशय अपवर्गं निर्माहि-निर्माहि संसारदुखं यातनां विच्छेदय-विच्छेदय पापानि संशमय-संशमय चतुवर्गं साधय-साधय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं यान् वयं द्विष्मो ये चास्मान् विद्विषन्ति तान् सर्वान् विनाशय-विनाशय मारय-मारय शोषय-शोषय

क्षोभय-क्षोभय मयि कृपां निवेशय-निवेशय फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रें हसख्फ्रें हूं स्फ्रों क्लीं ह्रीं जय-२ चराचरात्मक-ब्रह्माण्ड-उदर-वर्ति-भूत-संघाराधिते प्रसीद-प्रसीद तुभ्यं देवि नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते।।

अर्थः- ओम् ख्फ्रें ह्सौः सौः श्रीं ऐं ह्रौं क्रों स्फ्रों सर्वसिद्धि प्रदान करें, प्रदान करें, मेरे मनोरथ पूर्ण करें, पूर्ण करें, मुक्ति प्रदान करें, प्रदान करें , भवपाश से मुक्त करें, मुक्त करें, जन्ममृत्यु से पार करें, पार करें, दूसरों की विद्या का प्रदर्शन करें, प्रदर्शन करें, अपवर्ग से उबारें, उबारें, संसारदुख की यातना को दूर करें, दूर करें, पापों का नाश करें, नाश करें, चतुवर्ग का साधन करें, साधन करें, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं, जो मुझसे द्वेष रखते हों, उन सबका विनाश करो, विनाश करो, मारो मारो, शोषण करो, शोषण करो, क्षोभण करो, क्षोभण करो, मुझ पर कृपा करो, कृपा करो, फ्रें ख्फ्रें ह्स्फ्रें हसख्फ्रें हूं स्फ्रों क्लीं ह्रीं जय जय चराचरात्क-ब्रह्माण्ड-उदरवर्ति-भूत-संघाराधिते प्रसीद-प्रसीद तुभ्यं देवि नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते। (देवि! आपको बारम्बार-२ नमस्कार है।)



Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

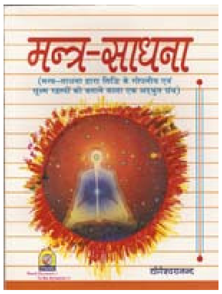
My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based free of cost monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi



2. Mantra Sadhana



3. Shodashi Mahavidya **(Tripursundari Sadhana)**

